डॉ. रॉबर्ट वानॉय , किंग्स, व्याख्यान 15

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

यहोशापात, यहोराम , येहू से होशे तक इस्राएल

यहोशापात और यहोराम

के अधीन 1. यहोशापात का राज्यारोहण - 1 राजा 15:24

आइए यहोशापात और यहोराम के अधीन यहूदा को देखें । आपने 1 राजा 15:24 में यहोशापात के राज्यारोहण के बारे में पढ़ा। आपने 1 राजा 15:24 में पढ़ा, "आसा अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसे उसके पिता दाऊद के नगर में उन्हीं के पास मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राजा हुआ।" लेकिन फिर आप देखते हैं कि कथा उत्तर की ओर बदल जाती है इसलिए आप यहोशापात के बारे में ज्यादा नहीं पढ़ते हैं; आपको 1 राजा 22, पद 41 पर जाना होगा। वहाँ आपने पढ़ा कि इस्राएल के राजा अहाब के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा का राजा बना। जब वह राजा बना तब वह पैंतीस वर्ष का था, और यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक राज्य करता रहा। तो 1 से किंग्स 22, श्लोक 41 से 50 तक, आपके पास यहोशापात की चर्चा है, और जैसा कि आपने देखा है, किंग्स में यहोशापात के बारे में बहुत कुछ नहीं बताया गया है। यह केवल कुछ श्लोक हैं.

2 इतिहास में यहोशापात इतिहास की पुस्तक में उसके बारे में और भी बहुत कुछ बताया गया है। आप समानताएं 2 इतिहास 17:1 से 20:37 तक देखें, और आप देख सकते हैं कि राजाओं की तुलना में इतिहास में यहोशापात के बारे में बहुत कुछ बताया गया है। मुझे लगता है कि शायद इसका कारण यह है कि किंग्स में इस समय ओमरी के साथ उत्तर की स्थिति पर जोर दिया जा रहा है और अहाब, बाल पूजा का प्रवेश द्वार, एलिय्याह की सेवकाई, और उस तरह की चीज़। उत्तर में जो कुछ हो रहा है, उसकी तुलना में यहोशापात का महत्व अपेक्षाकृत कम है। इसलिए किंग्स के लेखक ने हमें यहोशापात के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं दी है। हालाँकि, इतिहास अकेले यहूदा का इतिहास बताता है।

याद रखें इतिहास में आपके पास उत्तरी साम्राज्य के अधिक संदर्भ नहीं हैं। इतिहास वास्तव में डेविड के राजवंश और डेविड की वंशावली में रुचि रखता है । तो आपके पास बस यहूदा का इतिहास है। उत्तर का उल्लेख केवल तभी किया जाता है जब दक्षिण में कुछ घटित होता है जो उत्तर में घटित होने वाली घटनाओं से संबंधित होता है। इसलिए राजाओं के लेखक की तुलना में इतिवृत्तलेखक के लिए यहोशापात अधिक रुचिकर है।

बस उसी के संबंध में, उदाहरण के लिए, एलीजा का इतिहास में केवल एक बार उल्लेख किया गया है, और एलीशा का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं किया गया है। तो आप देख सकते हैं कि कैसे उत्तर पर ध्यान केंद्रित करना इतिहास के लेखक की रुचि नहीं थी। लेकिन यदि आप इतिहास में गिने जाने वाले राजाओं की तुलना करते हैं, तो यहोशापात एक महत्वपूर्ण राजा के रूप में सामने आता है। वह प्रभु के प्रति सच्चा था। उनका बहुत लम्बा शासनकाल था। वह पैंतीस वर्ष का था, और यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक राज्य करता रहा। अत: उनका शासनकाल लम्बा रहा। वह मूल रूप से एक धर्मात्मा व्यक्ति थे, लेकिन यदि आप उनके जीवन पर नजर डालें तो उन्होंने कुछ गंभीर गलतियाँ कीं। आसा और यहोशापात दोनों उत्तरी साम्राज्य के साथ शांतिपूर्ण संबंध बनाए रखते हैं।

यहोशापात के बेटे ने अहाब की बेटी से शादी की और अहाब के साथ उसका गठबंधन

मुझे नहीं लगता कि यह अपने आप में आपत्तिजनक है, लेकिन यहोशापात इससे भी आगे जाता है और उत्तर के साथ घनिष्ठ गठबंधन बनाता है। यहोशापात के बेटे यहोराम ने अतल्याह से शादी की, जो अहाब और शायद इज़ेबेल की बेटी है, हालाँकि उसकी माँ का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। अतल्याह संभवतः इज़ेबेल की बेटी है और निश्चित रूप से अहाब की बेटी है। आपने इसके बारे में 2 राजा 8:18 में पढ़ा; यह यहूदा के राजा यहोराम के विषय में है जो यहोशापात का पुत्र है। "वह अहाब के घराने की नाईं इस्राएल के राजाओं के समान चला, क्योंकि उस ने अहाब की बेटी से विवाह किया। उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।" अत: यहोशापात के पुत्र ने अतल्याह से विवाह किया। इसका अंतिम परिणाम, यदि यह परमेश्वर का हस्तक्षेप न होता, तो दाऊद के घराने का विनाश होता।

आख़िरकार अतल्याह ने दाऊद के घराने को मिटा देने का प्रयास किया, और केवल योआश बच गया ताकि दाऊद का वंश चलता रहे।

2 इतिहास में यहोशापात को येहू द द्रष्टा द्वारा अहाब के साथ गठबंधन के लिए डांटा गया है। यदि आप 2 इतिहास 19:2 को देखते हैं, तो आप पढ़ते हैं कि हनानी का पुत्र येहू द्रष्टा, उससे (यहोशापात) मिलने के लिए निकला और राजा से कहा, “क्या तुम्हें दुष्टों की सहायता करनी चाहिए और उन लोगों से प्रेम करना चाहिए जो प्रभु से घृणा करते हैं? इस कारण यहोवा का क्रोध तुम पर भड़का है। संदर्भ में, यहोशापात के उस बयान का मुद्दा अहाब के साथ उसका गठबंधन था। उस गठबंधन का वर्णन 1 राजा 22 में किया गया है। हमने पहले ही उस अध्याय को संक्षेप में देख लिया है जहां यहोशापात , अराम या सीरिया के राजा के खिलाफ लड़ने के लिए

रामोत गिलियड जाने में अहाब के साथ शामिल होता है। रामोत गिलाद में यहोशापात और अहाब , अहाब की मृत्यु

अब उस अध्याय में, यानी 1 राजा 22, आपके पास वह दिलचस्प आदान-प्रदान है जब यहोशापात कहता है कि वह प्रभु से सुनना चाहता है कि क्या उन्हें रामोत गिलाद के खिलाफ जाना चाहिए या नहीं। अहाब ऊपर जाना चाहता है, और यहोशापात निश्चित नहीं है कि यह एक अच्छा विचार है। श्लोक 5: यहोशापात ने इस्राएल के राजा से कहा, “पहले यहोवा से सलाह ले।” तब इस्राएल के राजा ने भविष्यद्वक्ताओं को अर्थात् कोई चार सौ पुरूष इकट्ठे करके उन से पूछा, क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने को जाऊं वा रुका रहूं? 'जाओ,' उन्होंने उत्तर दिया, 'क्योंकि प्रभु इसे राजा के हाथ में दे देगा।' यहोशापात ने पूछा, 'क्या अब यहां यहोवा का कोई भविष्यवक्ता नहीं है जिससे हम पूछ सकें?' यहोशापात कहता है, “राजा को ऐसा नहीं कहना चाहिए।” परन्तु उन्होंने उसे बुलाया और पूछा कि उन्हें क्या करना चाहिए, और पद 15 में जब वह आया, तो राजा ने उससे पूछा: "मीकायाह, क्या हम गिलाद के रामोत के विरुद्ध युद्ध करें , या मैं रुका रहूं?" 'हमला करो और विजयी बनो,' उसने उत्तर दिया, 'क्योंकि प्रभु इसे राजा के हाथों में दे देंगे।" अब, उसने व्यंग्य की

अभिव्यक्ति के साथ ऐसा कहा होगा जो स्पष्ट और स्पष्ट था क्योंकि प्रतिक्रिया है: "राजा ने कहा उससे कहा, 'कितनी बार मुझे तुम्हें यह शपथ खिलानी पड़ेगी कि तुम मुझे प्रभु के नाम पर सत्य के अलावा और कुछ नहीं बताओगे?"'

तब वह वास्तविक संदेश देता है, और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वास्तविक संदेश क्या है। वह कहता है, "मैं ने सारे इस्राएल को बिना रखवाले की भेड़-बकरियों की नाईं पहाड़ों पर तितर-बितर होते देखा; और यहोवा ने कहा, इन लोगों का कोई स्वामी नहीं। हर एक को शांति से घर जाने दो।" इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि वह मेरे बारे में कभी भी कोई अच्छी भविष्यवाणी नहीं करता, केवल बुरी भविष्यवाणी करता है?"

परमेश्वर अहाब के पैगम्बरों के मुँह में
एक झूठ बोलने वाली आत्मा भेजता है यह उस संबंध में है, आखिरकार, आप उस कविता पर आते हैं जिसके बारे में आपने कविता 22 में झूठ बोलने वाली आत्मा की अपनी छोटी चर्चा लिखी थी: "मैं बाहर जाऊंगा और उसके सभी भविष्यवक्ताओं के मुंह में झूठ बोलने वाली आत्मा बनूंगा। प्रभु ने कहा, 'आप उसे लुभाने में सफल होंगे।' 'जाओ और यह करो।'" मैं नहीं जानता कि हमें इसमें बहुत अधिक समय लगाना चाहिए; मुझे लगता है कि आप सभी ने इस पर बहुत अच्छा काम किया है। मुझे लगता है कि मुद्दा यह है: अहाब के पैगंबर पहले से ही झूठ के लिए प्रतिबद्ध थे, और ऐसा लगता है कि यहां क्या होता है कि वे कठोर हो गए हैं, और वे पहले से ही अपने बुरे तरीके से पूर्वनिर्धारित हैं। चाहे मीकायाह ने कोई दर्शन देखा हो या नहीं, यदि आप श्लोक 19 पर वापस जाएँ, तो मीकायाह ने कहा, "इसलिए, प्रभु का वचन सुनो: मैंने प्रभु को अपने सिंहासन पर बैठा देखा और सभी सेनाओं को उसके चारों ओर खड़ा किया।" यह एक दूरदर्शी संदर्भ है जहां वह इस अनाम झूठ बोलने वाली आत्मा को आगे बढ़ते हुए देखता है। चाहे दृष्टि को प्रतीकात्मक रूप से लिया जाए या शाब्दिक रूप से, टिप्पणीकार असहमत हैं। मुझे लगता है कि किसी भी मामले में भगवान द्वारा भेजी गई झूठ बोलने वाली आत्मा को यह संकेत देने के रूप में समझा जाना

चाहिए कि शैतान जो भी करता है वह अंततः भगवान के आदेशों की संप्रभुता के अधीन है। इसका मतलब है कि मनुष्यों और स्वर्गदूतों के बुरे कार्यों को ईश्वर के आदेशों से बाहर नहीं रखा गया है।

मुझे लगता है कि जो पाठ हमेशा स्पष्ट होता है वह अधिनियम 2:23 है: "यह मनुष्य परमेश्वर के निर्धारित उद्देश्य और पूर्वज्ञान के अनुसार तुम्हें सौंपा गया था; और तू ने दुष्ट मनुष्यों की सहायता से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला।" अब यहाँ आपके पास दुष्ट लोग हैं जो मसीह को क्रूस पर चढ़ाते हैं, और वे अपने कार्यों के लिए ज़िम्मेदार हैं; और फिर भी यह परमेश्वर के निर्धारित उद्देश्य और पूर्वज्ञान द्वारा किया जाता है। अब, मुझे लगता है कि आप तत्काल इस समस्या से जूझ रहे हैं कि दैवीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के बीच कैसे सामंजस्य बिठाया जाए, और विशेष रूप से आपको मनुष्य के बुरे कृत्यों के बारे में बात करते समय सावधान रहना होगा: कि वे भगवान को पाप का लेखक न बना दें। मुझे लगता है कि अंततः वहां एक रहस्य है जिसे आप पूरी तरह से समझा नहीं सकते। पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट करता है कि सभी चीज़ें परमेश्वर के नियंत्रण में हैं, जिनमें मनुष्यों के बुरे कार्य भी शामिल हैं। फिर भी, मनुष्य अपने बुरे कार्यों के लिए जिम्मेदार है, और निश्चित रूप से भगवान पाप का लेखक नहीं है; फिर भी वह संप्रभु है। इसलिए, मुझे यकीन नहीं है कि आप उनमें से कुछ चीजों को एक निश्चित तनाव में छोड़ने के अलावा और कुछ कर सकते हैं, आप कह सकते हैं। इस अर्थ में कि आप पूरी तरह से सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकते हैं, या यह सब समझा नहीं सकते हैं, फिर भी पवित्रशास्त्र बहुत स्पष्ट है कि ईश्वर संप्रभु है; फिर भी मनुष्य जिम्मेदार है.

इसके बाद यहेजकेल 14:9 कहता है, "यदि भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वाणी करने के लिये फुसलाया जाता है, तो मैं यहोवा ने उस भविष्यद्वक्ता को फुसलाया है, और मैं अपना हाथ उसके विरूद्ध बढ़ाकर उसे अपनी प्रजा इस्राएल के बीच में से नाश करूंगा।" मुझे लगता है, फिर से, यह दैवीय कठोरता जैसी ही चीज़ है, ठीक उसी तरह जैसे फिरौन का हृदय कठोर हो गया था। वह अपने बुरे चालचलन में लगा हुआ था। रोमियों 1 का अधिकांश भाग कहता है कि ईश्वर लोगों को उनकी बुरी अभिलाषाओं के हवाले कर देता है, जहाँ उस क्रम

में उनकी निरंतरता, एक निश्चित अर्थ में, उन पर ईश्वर का न्याय है। लेकिन उस ईजेकील मार्ग में जाने में हमें आधा घंटा और लगेगा। इसलिए मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम इसे यहीं छोड़ दें।

2. यहोराम - 2 राजा 8 और 2 क्रोन। 21

ठीक है, ये यहोशापात के बारे में कुछ टिप्पणियाँ थीं। आइए हम उसके पुत्र यहोराम के पास चलें । 2 राजा 8:16-24 2 इतिहास 21:1-20 में समानान्तर हैं। 2 राजा 8:16 में आप पढ़ते हैं, " इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र योराम के पाँचवें वर्ष में , जब यहूदा का राजा यहोशापात था, तब यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा का राजा होकर राज्य करने लगा। जब वह राजा बना तब बत्तीस वर्ष का था, और यरूशलेम में आठ वर्ष तक राज्य करता रहा।" इस प्रकार जब वह यहोशापात का उत्तराधिकारी हुआ तब वह बत्तीस वर्ष का था, और उसने आठ वर्ष तक शासन किया। याद रखें, उसकी पत्नी अहाब की बेटी अतल्याह थी। और उसके शासनकाल में अहाब के साथ यहोशापात के समझौते के परिणाम साकार होने लगे।

यहोराम ने अपने भाइयों को मार डाला

जब उसने सिंहासन संभाला, तो हम 2 इतिहास 21:2-4 से सीखते हैं, यहोराम ने अपने भाइयों को मार डाला। 2 इतिहास 21:2: “ यहोराम के भाई, यहोशापात के पुत्र, अजर्याह, यहीएल , जकर्याह, अजर्याहू , मीकाएल और शपत्याह थे । ये सभी इस्राएल के राजा यहोशापात के पुत्र थे। उनके पिता ने उन्हें चाँदी, सोना और मूल्यवान वस्तुएँ बहुत उपहार में दीं, और यहूदा में गढ़वाले नगर भी दिए, परन्तु उन्होंने राज्य यहोराम को दे दिया था क्योंकि वह उनका पहलौठा पुत्र था। जब यहोराम ने अपने पिता के राज्य पर दृढ़ता से कब्ज़ा कर लिया, तो उसने इस्राएल के कुछ हाकिमों समेत अपने सभी भाइयों को तलवार से मार डाला।” इसलिए वह अपने भाइयों को मार डालता है।

एदोमियों का विद्रोह और उसकी घृणित मृत्यु उसके शासनकाल के दौरान , एदोमियों और लिब्ना ने विद्रोह किया। 2 राजा 8:20: " यहोराम के समय में , एदोम ने यहूदा के विरुद्ध विद्रोह किया और अपना राजा स्थापित किया।" श्लोक 22 में नीचे: " लिब्ना ने इस समय विद्रोह किया।" वह पलिश्ती सीमा के निकट का स्थान प्रतीत होता है। हमने पढ़ा कि यहोराम की मृत्यु प्रभु द्वारा भेजी गई एक असाध्य बीमारी से हुई। हम इसे 2 इतिहास 21:18 से सीखते हैं। यह रोचक है; 2 इतिहास 21:18 कहता है, “ समय के साथ यहोवा ने यहोराम को एक असाध्य रोग से पीड़ित कर दिया। दूसरे वर्ष के अन्त में रोग के कारण उसकी आँतें बाहर आ गईं और बड़े कष्ट से उसकी मृत्यु हो गई। उसके लोगों ने उसके सम्मान में उसके पूर्वजों की तरह आग नहीं जलाई।” और फिर पद 20 यह कथन देता है: "वह बिना किसी खेद के मर गया, और उसे दाऊद के नगर में दफनाया गया।" कोई लोकप्रिय राजा नहीं; जैसा कि इतिहास कहता है, उनका निधन हो गया, "किसी को भी अफसोस नहीं हुआ।" वह 2 इतिहास 21:20 है।

तृतीय. येहू से होशे तक विभाजित साम्राज्य - इज़राइल

ठीक है, रोमन अंक III है: "येहू से होशे तक विभाजित साम्राज्य।" अब, खुद को फिर से उन्मुख करने के लिए, यह एक प्रमुख विभाजन बिंदु है। "1" है: "सोलोमन के अधीन यूनाइटेड किंगडम, 1 राजा 1-11," और फिर आपको इज़राइल के इतिहास के राज्य काल में दूसरे प्रमुख विभाजन बिंदु के रूप में येहू से पहले विभाजित राज्य मिलता है, आप कह सकते हैं। 931 ईसा पूर्व, सुलैमान के बाद, एक प्रमुख विभाजन बिंदु है। तो हम विभाजित साम्राज्य की शुरुआत से येहू तक जाते हैं।

हम येहू से शुरू करते हैं और विभाजित साम्राज्य को होशे तक ले जाते हैं। होशे उत्तर के राजाओं में अंतिम था और यह हमें उत्तरी साम्राज्य के पतन की ओर ले जाता है। तो इसके अंतर्गत हमारे पास दो राजवंश हैं: हमारे पास येहू का राजवंश है और फिर 841 ईसा पूर्व के बाद उन अंतिम राजाओं का उत्तराधिकार है।

तो सबसे पहले येहू का राजवंश: 841 की क्रांति के अलावा और कुछ नहीं। यह आपको एक प्रकार का विभाजन बिंदु देता है जो उत्तर और दक्षिण दोनों के लिए समान है क्योंकि येहू ने 841 में उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा को मार डाला था। इसलिए आप बाद में दोनों राज्यों में शुरुआत कर रहे हैं।

A. येहू का राजवंश

ठीक है "ए" "येहू का वंश" है। येहू का राजवंश उत्तरी साम्राज्य का चौथा राजवंश है। याद रखें, दक्षिण में आपके पास हर तरह से एक राजवंश था, लेकिन उत्तर में आपके पास पहले यारोबाम प्रथम था, फिर आपके पास बाशा , फिर ओम्री और अब येहू थे, जहां तक राजाओं की बात है जिन्होंने राजवंशों की स्थापना की जिनके उत्तराधिकारी थे। यारोबाम प्रथम, बाशा , ओम्री , और येहू। यह चौथा है, और येहू का राजवंश सबसे लंबा है। यह लगभग 80 वर्षों तक चलता है।

जब येहू ने उत्तरी साम्राज्य पर कब्ज़ा किया, तो उत्तरी साम्राज्य काफी कमज़ोर था, लेकिन उसके वंश के चौथे राजा, जो कि यारोबाम द्वितीय है, ने उत्तरी साम्राज्य एक समृद्ध, मजबूत राष्ट्र बना दिया। इसलिए येहू के राजवंश के तहत, जहां तक ताकत और समृद्धि का

सवाल है, उत्तरी साम्राज्य में चीजें बहुत सकारात्मक तरीके से विकसित हुईं। हालाँकि, जहाँ तक आध्यात्मिक चीज़ों का सवाल है, नहीं।

1. येहू की क्रांति - 2 राजा 9-10 और 2 इतिहास 22:7-12 ए। येहू अभिषिक्त राजा - 1 राजा 9:1-13

ठीक है "1" है: "येहू की क्रांति, 2 राजा 9 और 10, 2 इतिहास 22:7-12।" हम पहले ही "ए" "येहू अभिषिक्त राजा, 2 राजा 9:1-13" देख चुके हैं। यहीं पर एलीशा ने भविष्यवक्ताओं के एक दल को येहू के पास भेजा और उसे घोषणा की कि प्रभु ने उसे राजा बनने के लिए चुना है।

बी। येहू ने योराम और अहज्याह को मार डाला - 2 राजा 9:14-29

"बी" है: "येहू ने योराम और अहज्याह को मार डाला, 2 राजा 9:14-29।" हमने उस पर पहले ही बात कर ली है। यह रामोत गिलाद में हजाएल के साथ युद्ध के बाद घटित होता है जिसमें योराम घायल हो गया था। इस अध्याय में अनेक पूर्ण भविष्यवाणियाँ हैं। यदि आप 2 राजा 9, श्लोक 26 को देखते हैं, तो आप पढ़ते हैं: "'कल मैंने नाबोत और उसके पुत्रों का खून देखा,' प्रभु की वाणी है, 'और मैं निश्चित रूप से इस भूमि पर तुम्हें इसका भुगतान करूंगा ,' प्रभु की घोषणा है. अब, प्रभु के वचन के अनुसार, उसे उठाओ और उस भूखंड पर फेंक दो।"

भविष्यवाणी और पूर्ति ऐसा लगता है कि आपके पास जो कुछ है वह जानबूझकर पूरी की गई भविष्यवाणी है। यह अहाब के विरुद्ध भविष्यवाणी की पूर्ति को पूरा करता है। आप 1 राजा 21:19 पर वापस जाएँ जहाँ एलिय्याह कहता है, "यहोवा यों कहता है: 'क्या तू ने किसी मनुष्य की हत्या करके उसकी सम्पत्ति नहीं छीन ली है? तब उससे कहो, "यहोवा यों कहता है: जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का ख़ून चाटा, वहाँ कुत्ते तुम्हारा ख़ून चाटेंगे- हाँ, तुम्हारा।""" लेकिन अहाब ने पश्चाताप किया और यहोवा ने कहा कि उसके बेटे को कष्ट

होगा। 1 राजा 21:29: “क्या तुमने देखा है कि अहाब ने मेरे सामने कैसे खुद को दीन बना लिया है? क्योंकि उसने अपने आप को दीन बना लिया है, मैं उसके दिन में यह विपत्ति न डालूंगा, परन्तु उसके बेटे के दिनों में मैं उसके घराने पर यह विपत्ति डालूंगा। यहां 2 राजा 9:26 में आप इसकी अंतिम परिणति देखते हैं जब अहाब के पुत्र योराम को ज़मीन पर गिरा दिया जाता है।

2 राजा 9:30-37 में आपके पास ईज़ेबेल के संबंध में भविष्यवाणी की पूर्ति है, और वह 1 राजा 21:23 पर वापस जाता है जहां एलिय्याह कहता है, "और ईज़ेबेल के बारे में भी, प्रभु कहते हैं: 'कुत्ते ईज़ेबेल को खा जाएंगे।" यिज्रेल की शहरपनाह।" और फिर आप यहां 2 राजाओं में देखते हैं 9 येहू यिज्रेल को गया, और ईज़ेबेल वहां है, और उसने उसे खिड़की से फेंक दिया, और वह मर गई। और पद 36 कहता है, "यह यहोवा का वह वचन है जो उस ने अपने दास तिशबी एलिय्याह के द्वारा कहा था : यिज्रेल की भूमि पर कुत्ते ईज़ेबेल का मांस खा जाएंगे।"

और जैसा कि हमने पहले भी देखा, येहू की क्रांति ने यहूदा को भी प्रभावित किया; यह केवल उत्तरी साम्राज्य नहीं था। येहू ने यहूदा के राजा अहज्याह को मार डाला। 2 राजा 9:27: “जब यहूदा के राजा अहज्याह ने देखा कि क्या हुआ है, तो वह बेथहग्गन के मार्ग से भाग गया । येहू ने चिल्लाते हुए उसका पीछा किया, "उसे भी मार डालो!" इबलीम के पास गूर के रास्ते में उन्होंने उसे उसके रथ में ही घायल कर दिया , लेकिन वह मगिद्दो भाग गया और वहीं मर गया।"

इसलिए जोराम और अहज्याह दोनों मारे गए, और फिर येहू ने बाल पूजा को मिटाने का प्रयास किया, हालांकि अध्याय 10 के पहले भाग में आपने अहाब के परिवार के बाकी लोगों को मार डाला, जिसमें दक्षिण से अहज्याह के कुछ रिश्तेदार भी शामिल थे। 2 राजा 10, श्लोक 13 को देखें: "वह यहूदा के राजा अहज्याह के कुछ रिश्तेदारों से मिला और पूछा, 'तुम कौन हो?' और उन्होंने कहा, हम अहज्याह के कुटुम्बी हैं, और राजा और राजमाता के घरानों का स्वागत करने आए हैं। 'उन्हें जीवित पकड़ो!' उसने आदेश दिया। इसलिये उन्होंने उन बयालीस पुरूषोंको जीवित पकड़कर बेतएकेड के कुएं के पास मार

डाला। उसने कोई भी जीवित व्यक्ति नहीं छोड़ा।" इसलिए उसने न केवल अहाब के परिवार को मिटा दिया, उसने अहज्याह के वंश के कई रिश्तेदारों को भी मार डाला।

तब वह बाल की पूजा चालू करता है, और स्वयं बाल का सम्मान करने के बहाने , वह बाल के इन सभी अनुयायियों को इकट्ठा करता है; और जब वे सब उसके पास हो जाते हैं, तो वह उन पर आक्रमण करता है और उन्हें मार डालता है। यह अध्याय 10 का उत्तरार्द्ध भाग है। परिणाम यह है कि इज़राइल में येहू द्वारा बाल पूजा को नष्ट कर दिया गया है। आपने इसे 2 राजा 10:28 में पढ़ा: "इसलिए येहू ने इस्राएल में बाल पूजा को नष्ट कर दिया। हालाँकि, वह नबात के पुत्र यारोबाम के पापों से दूर नहीं हुआ । लेकिन याद रखें, अतल्याह अभी भी दक्षिण में है, और अतल्याह के माध्यम से झूठी पूजा का अहाब का प्रभाव अभी भी बना हुआ है।

असीरियन ब्लैक ओबिलिस्क - जेहू झुक रहा है

असीरियन अभिलेखों में भी, हमने उल्लेख किया है कि पहले, वहाँ एक शिलालेख था जिसे "ब्लैक ओबिलिस्क" के नाम से जाना जाता था। जिसमें शल्मनेसर तृतीय येहू से कर लेने की बात कहता है। यहीं पर, मैंने पहले इसका उल्लेख किया था, येहू को परोक्ष रूप से " ओमरी का पुत्र " कहा जाता था। वह वास्तव में ओम्री का पुत्र नहीं था ; उसने एक क्रांति शुरू की , और उसने एक नया राजवंश शुरू किया; लेकिन ओम्री असीरियन लोगों के बीच इतना प्रसिद्ध था कि चूंकि येहू उत्तरी साम्राज्य का राजा है, इसलिए उसे " ओमरी का पुत्र " कहा जाता है। लेकिन ब्लैक ओबिलिस्क 1846 में पाया गया था। यह साढ़े छह फीट ऊंचा है। यह शल्मनेसर III की सैन्य उपलब्धियों के बारे में बताता है। इसमें इस ओबिलिस्क पर राहत में पांच अलग-अलग क्षेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करने की तस्वीरें हैं, और उन पांच तस्वीरों में से एक - मुझे लगता है कि हम इसे पहले भी देख चुके हैं - येहू शल्मनेसर के सामने झुककर उसे श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा था।

सी. इज़ेबेल मारा गया है डी. अहाब का परिवार मारा गया है इसलिए येहू ने जोराम और

अहज्याह को मार डाला, और "सी" है: "इज़ेबेल मारा गया।" "डी" का अर्थ है "अहाब का परिवार मारा गया।" मैं इस सब पर चर्चा कर रहा हूं और "सी" और "डी" का उल्लेख नहीं किया है। इस प्रकार येहू की क्रांति सफल रही। मुझे लगता है कि हम कहेंगे कि अहाब के घर को नष्ट करके उसने अच्छा काम किया, लेकिन ऐसा लगता है कि एक निश्चित बिंदु पर वह उस काम से आगे निकल गया जिसे करने के लिए उसे नियुक्त किया गया था। उसे अहाब के घर को नष्ट करने के लिए नियुक्त किया गया था, 2 राजा 9:6 और 7, लेकिन मुझे लगता है कि जब उसने सामरिया में अहज्याह के बयालीस रिश्तेदारों को मार डाला, तो यह निश्चित रूप से अनुचित था। जब आप होशे 1:4 को देखते हैं, तो आपके पास एक संदर्भ होता है जो येहू के कुछ अच्छे कामों के बावजूद उस पर फैसले का संकेत देता है। एक मिश्रण था. होशे 1:4 कहता है: "तब यहोवा ने होशे से कहा, 'उसे यिज्रेल बुलाना क्योंकि मैं यिज्रेल में हुए नरसंहार के लिये येहू के घराने को शीघ्र ही दण्ड दूंगा, और इस्राएल के राज्य को समाप्त कर दूंगा।" इसलिए भले ही उसे अहाब के घराने को नष्ट करने के लिए नियुक्त किया गया था, वह उससे आगे निकल गया, और इसके लिए भगवान कहते हैं कि न्याय येहू के घराने पर आने वाला है।

2. येहू के उत्तराधिकारी अ. यहोआहाज - 2 राजा 13:1-9

ठीक है "2" है: "येहू के उत्तराधिकारी," और मैंने वहां चार सूचीबद्ध किए हैं: यहोआहाज , यहोआश, यारोबाम द्वितीय और जकर्याह। मैं इन राजाओं के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा । यहोआहाज 2 राजा 13:1-9 में है। नौ छंदों में हमें बताया गया है कि उसने 17 वर्षों तक शासन किया। उसने बुरा किया; उसने यारोबाम के पुत्र नबात के पाप का अनुसरण किया । उसके शासनकाल के दौरान, इज़राइल को हजाएल और बेन- हदाद के तहत सीरिया द्वारा धमकी दी गई थी । इसलिए यहोआहाज के समय में , सीरिया एक खतरा है। यहोआहाज़ के बारे में बहुत कुछ नहीं बताया गया है ।

बी। योआश या यहोआश - 2 राजा 13:10-14:16

"बी" योआश , या यहोआश है; नाम के दोनों रूपों का प्रयोग किया जाता है। 2 राजा 13:10 से 14:16 2 इतिहास 25:17-24 के समानांतर है। संभवतः उसके शासनकाल के दौरान सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एलीशा की मृत्यु हो गई। 2 राजा 13:20, हमने पहले उस पद को देखा था "एलीशा मर गया और दफनाया गया।" लेकिन यह उसी अध्याय में है जहां यहोआश एलीशा के बारे में कहता है, "मेरे पिता, मेरे पिता"; वह श्लोक 14 में है, "इस्राएल के रथ और घुड़सवार।" लेकिन एलीशा की मृत्यु हो गई, जैसा कि आप देखते हैं, पद 20 में योआश के समय में हुआ था । अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि योआश को सीरियाई लोगों के विरुद्ध आंशिक सफलता मिलेगी। देखिए, सीरियाई लोगों ने उसके पिता यहोआहाज के समय में धमकी दी थी , और एलीशा का कहना है कि योआश को उनके खिलाफ आंशिक सफलता मिलेगी।

ऐसा तब हुआ जब उसने पांच या छह बार के बजाय केवल तीन बार ही जमीन पर प्रहार किया था, जो तब पूर्ण सफलता के बजाय मध्यम सफलता का प्रतीक प्रतीत होता था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें पर्याप्त उत्साह नहीं था, और इसलिए आपने श्लोक 18 में पढ़ा, "जमीन पर प्रहार करो," एलीशा उससे कहता है, लेकिन उसने तीन बार प्रहार किया और रुक गया। परमेश्वर का जन उस पर क्रोधित हुआ और बोला, “तुम्हें पाँच या छः बार ज़मीन पर मारना चाहिए था; तब तू अराम को हरा कर उसे पूरी तरह नष्ट कर देता। लेकिन अब आप इसे केवल तीन बार हराएंगे।” इसलिए उसे पूर्ण सफलता की बजाय मध्यम सफलता मिलेगी। इस्राएल के

योआश ने यहूदा के अमस्याह को हराया

उसके शासनकाल के दौरान एक और महत्वपूर्ण बात यहूदा के अमज़ियाह की हार है। यहूदा के अमज़िया ने योआश को युद्ध के लिए चुनौती दी थी, जो करना एक मूर्खतापूर्ण बात थी क्योंकि उत्तरी साम्राज्य दक्षिणी साम्राज्य से अधिक मजबूत है। लेकिन एदोमियों पर जीत के कारण अमस्याह को गर्व महसूस हुआ और उसने सोचा, यह 2 राजाओं 14 में है, और उसने सोचा कि उस जीत के कारण वह आगे बढ़ सकता है और उत्तरी साम्राज्य से

सफलतापूर्वक लड़ सकता है। यहोआश ने उसे इसके बारे में चेतावनी दी, लेकिन अमस्याह मूर्खतापूर्वक जारी रहा। तो आपने 2 राजाओं 14 की आयत 12 में पढ़ा, "यहूदा को इस्राएल ने हरा दिया, और हर एक व्यक्ति अपने घर को भाग गया। इस्राएल के राजा यहोआश ने योआश के पुत्र, यहूदा के राजा अमस्याह को पकड़ लिया , और उसने यरूशलेम की 600 फुट लम्बी दीवार को तोड़ दिया। उसने यहोवा के मन्दिर और राजमहल के भण्डारों में पाया गया सारा सोना, चाँदी और सभी वस्तुएँ ले लीं। उसने लोगों को बंधक बना लिया और सामरिया लौट आया।" तो यह उत्तर और दक्षिण के बीच संबंधों में सबसे कम बिंदुओं में से एक है जिसे आप कह सकते हैं। लेकिन यहोआश यहूदा के अमस्याह के इस हमले को विफल करने में सफल रहा और यहां तक कि यरूशलेम से लूट भी ले गया।

सी. यारोबाम द्वितीय योना की सफलता और समय - 14:23-29

यह हमें "सी" "जेरोबाम II" पर लाता है। फिर, हमें यारोबाम द्वितीय के बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताया गया है। 2 राजा 14:23-29 सात श्लोकों पर ध्यान दें। फिर भी, यदि आप श्लोक 23 को देखें, तो आप पढ़ते हैं: " यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में , इस्राएल के राजा यहोआश का पुत्र यारोबाम सामरिया में राजा हुआ, और उसने इकतालीस वर्ष तक राज्य किया।" वह एक लम्बा शासनकाल था, 41 वर्ष। इसके बारे में आपको छह या सात श्लोकों में बताया गया था. ओम्री की तरह, जो एक बहुत ही महत्वपूर्ण उत्तरी राजा था, लेकिन जिसके बारे में धर्मग्रंथ हमें बहुत कम बताता है, यारोबाम बहुत सफल था। आप ध्यान दें कि यह क्या कहता है कि उसने क्षेत्रीय रूप से इज़राइल की शक्ति को उसकी पिछली सीमाओं तक बढ़ाया। श्लोक 25 को देखें; उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, परन्तु पद 25 कहता है, "वह वही था जिसने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार इस्राएल की सीमाओं को लेबो हमात से लेकर अराबा के सागर तक पुनः स्थापित किया। अपने सेवक अमित्तै के पुत्र योना के द्वारा , जो गत हेपेर का भविष्यद्वक्ता था।" अब लेबो हमात उत्तर में दमिश्क से बहुत ऊपर है और अराबा का सागर मृत सागर है। इसलिए उसने उत्तरी साम्राज्य की सीमाओं को उत्तर और दक्षिण में मृत सागर तक,

लगभग यरूशलेम के समानांतर बढ़ा दिया। यह अमित्तै के पुत्र योना की भविष्यवाणी के अनुसार किया गया था , जो योना की पुस्तक का योना है। आप योना 1:1 पढ़ते हैं और यह कहता है, " अमित्तै का पुत्र योना ।"

ऐतिहासिक रूप में योना पर - 2 राजा 14:25 अब मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि राजाओं की पुस्तक में ऐतिहासिक कथा में भविष्यवक्ता योना को एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में संदर्भित किया गया है। यहां तक कि कुछ इवांजेलिकल विद्वानों में भी योना की किताब को इतिहास के बजाय कल्पना के रूप में लेने की एक बड़ी प्रवृत्ति है। और मुझे लगता है कि ऐसा करने पर कड़ी आपत्तियों में से एक यह तथ्य है कि 2 राजा 14:25 यह स्पष्ट करता है कि योना नाम का एक व्यक्ति था, जो अमिततताई का पुत्र था, जो यारोबाम द्वितीय के समय में रहता था, और जिसने भविष्यवाणी की थी, और उनकी भविष्यवाणी पूरी हुई। तो वह महज़ एक काल्पनिक व्यक्ति, या किसी प्रकार की काल्पनिक कहानी नहीं है, जो एक धार्मिक बिंदु, या कुछ और बताने के लिए कही गई हो। वह एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे।

अमोस, होशे और योना में यारोबाम द्वितीय लेकिन यारोबाम द्वितीय उत्तरी साम्राज्य का उत्कृष्ट राजा बन गया। मैं ऐसा आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि आर्थिक, राजनीतिक दृष्टिकोण से कहता हूं। उसने सीमाओं का विस्तार किया और इस्राएल समृद्ध हुआ। उसके शासनकाल के दौरान, आमोस, होशे और योना भविष्यवक्ता थे। न केवल योना, बल्कि आमोस और होशे भी। उत्तरी साम्राज्य में क्या चल रहा था, इसके बारे में हम किंग्स की इस कहानी की तुलना में अमोस और होशे की किताबें पढ़ने से बहुत कुछ सीखते हैं; क्योंकि किंग्स में यह बहुत संक्षिप्त है। लेकिन जब आप अमोस और होशे को पढ़ते हैं, तो आप पाते हैं कि सब कुछ ठीक नहीं था। समृद्धि भले ही रही हो, लेकिन समृद्धि गरीबों की कीमत पर थी। वहाँ बहुत बेईमानी, उत्पीड़न, सामाजिक अन्याय और धार्मिक धर्मत्याग था। मेरा मतलब है, यही तस्वीर आपको अमोस और होसे में मिलती है।

डी. जकर्याह - 2 राजा 5:8-12 (753-752 ईसा पूर्व)

ठीक है, "डी" है: "जकर्याह, 2 राजा 5:8-12।" उनका शासनकाल बहुत ही छोटा था। आपने पद 8 में देखा है: "यहूदा के राजा अजर्याह के अड़तीसवें वर्ष में, यारोबाम का पुत्र जकर्याह सामरिया में इस्राएल का राजा हुआ, और उसने छः महीने तक राज्य किया" - केवल छः महीने। "उसने अपने पुरखाओं के समान यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। याबेश के पुत्र शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। उसने लोगों के सामने उस पर हमला किया, उसकी हत्या कर दी और उसके बाद राजा बना। जकर्याह के शासनकाल की अन्य घटनाएँ इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखी गई हैं। इस प्रकार यहोवा का जो वचन येहू से कहा गया वह पूरा हुआ।" यहाँ भविष्यवाणी की एक और पूर्ति है। "तुम्हारे वंशज चौथी पीढ़ी तक इस्राएल के सिंहासन पर बैठेंगे।" तो आपके पास येहू, यहोआहाज़ , योआश , यारोबाम और जकर्याह हैं - केवल चार पीढ़ियाँ।

उत्तरी साम्राज्य की अस्थिरता के अंतिम दिन यह दिलचस्प है कि येहू राजवंश के पतन के साथ, उत्तरी साम्राज्य राजनीतिक अस्थिरता के दौर में प्रवेश कर गया है। आपके पास उत्तरी साम्राज्य में पांच और राजा हैं, और उनमें से एक को छोड़कर सभी की इस बिंदु से हत्या कर दी गई थी - एक अपवाद मेनहेम है। और दूसरी बात यह है कि यारोबाम द्वितीय के शासनकाल की ताकत और धन से, आप उत्तरी साम्राज्य में बहुत तेजी से पतन की ओर बढ़ते हैं और अश्शूरियों के हाथों गिर जाते हैं।

जकर्याह 753-752 ईसा पूर्व रहा होगा यारोबाम द्वितीय के शासनकाल का अंत 753 ईसा पूर्व हुआ था उत्तरी साम्राज्य 722 ईसा पूर्व चला गया था आप देखिए, आप 30 साल बोल रहे हैं और उत्तरी साम्राज्य अपनी समृद्धि और ताकत की ऊंचाई से गुलामी में चला गया है। इसलिए जकर्याह ने छह महीने, शल्लूम ने एक महीने, और मनहेम ने दस साल,

पकह्याह ने दो साल, पेकह ने बीस साल, होशे ने नौ साल शासन किया, लेकिन तीस साल में उत्तरी साम्राज्य चला गया और हत्याओं की एक श्रृंखला से बर्बाद हो गया।

बी. यहूदा 841 के बाद की सदी के दौरान

ठीक है, मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम इसी बिंदु पर रुकें। "बी" है: "यहूदा 841 के बाद की सदी के दौरान।" हम 841 के बाद की सदी में यहूदा से उठाएंगे और फिर अगले सप्ताह उत्तरी साम्राज्य के अंतिम दिनों और यहूदा की आखिरी सदी तक जाएंगे और देखेंगे कि हम कितनी दूर तक जा सकते हैं। मुझे लगता है कि अगले सप्ताह हम काफी अच्छे से साथ रह सकते हैं। निश्चित नहीं कि हम यह सब कर सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हम इसमें से अधिकांश कर सकते हैं।

लॉरेन इमानुएल द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया